International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 22-01-2022, Accepted: 05-02-2022, Published: 22-02-2022
Volume 8, Issue 1, 2022, Page No. 45-48

सेवा राम यात्री की कहानियों में यथार्थ चेतना

पवन कुमार साव
शोधार्थी, कल्याणी विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल, भारत

सारांश
हिंदी साहित्य जगत के प्रसिद्ध साहित्यकार 'सेवा राम यात्री' जी लगभग पांच दशकों से अपनी रचनाओं के माध्यम से पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करते रहे हैं। यात्री जी एक प्रसिद्ध कथाकार, उपन्यासकार और व्यंग्यकार है। इनकी कथादृष्टि व्यापक सामाजिक संदर्भ को लिए हुए है। जिसके केंद्र में आर्थिक रूप से कमजोर आम आदमी की जीवन गाथा मौजूद है। कथा दृष्टि के बिना कोई भी आधुनिक कहानी रची नहीं जा सकती या यूं कहा जाए कि आधुनिक कहानी बिना किसी कथादृष्टि के संभव नहीं है तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। सामान्य रूप से कथा दृष्टि का अर्थ कथा में निहित मूल विचार, दर्शन या कथा सृजन का विधान होता है। कहानी का सृजन वही कर पाता है जिसमें सृजनशील प्रतिभा होती हैद्य कविगुरु 'रवीन्द्रनाथ' के अनुसार "जब कोई बड़ी सृजनशील प्रतिभा समालोचना में हाथ डालती है, तब उसके लिए केवल यही संभव होता है कि वह समालोचना को ही सृजनात्मक कर्म बना दे।"[1] ठीक इसी प्रकार कहानी के सृजन में भी कथाकार की सृजनात्मक प्रतिभा ही उसकी कथा दृष्टि को एक नवीन और व्यापक आयाम प्रदान करती है। किसी भी लेखन में रचनाकार के अनुभव की अभिव्यक्ति, मनोरंजन अथवा समाज को मानवीय और जिम्मेदार बनाने के लिए होता है। जिसमें कल्पना और यथार्थ दोनों ही अपनी–अपनी जगह पर अपना एक विशेष महत्व रखते हैं परन्तु यथार्थ मानव जीवन की गहनता और जटिलता को समझने एवं जीवन में आने वाले व्यापक परिवर्तनों को उद्घाटित करने में ज्यादा कारगर होता है। 'रामदरश मिश्र' के अनुसार "एक रचनाकार का प्राथमिक दायित्व यथार्थ की पहचान को अभिव्यक्ति देना हैा यथार्थ का स्वरुप बड़ा ही संश्लिष्ट, जटिल और परिवर्तनशील होता है। उसे देखने के लिए जीवन का गहरा अध्ययन और व्यापक अनुभव अपेक्षित है ।"[2] साहित्य में यथार्थ समय–समय पर परिवर्तित होते रहते हैं। जिसका स्तर आर्थिक, सामाजिक और पारिवारिक इत्यादि कुछ भी हो सकता हैद्य कथाकार समाज में निहित यथार्थ को अपनी सर्जनात्मक चेतना के आधार पर ग्रहण करता है और उसे एक कथा का रूप देता है। "साहित्य में इस परिवर्तनशील यथार्थ की पहचान दो स्तरों पर होती है। एक तो समकालीन जीवन में लक्षित होने वाले सम्बन्धों, प्रसंगों, समस्याओं, घटनाओं, हलचलों आदि की स्वीकृति के स्तर पर, दूसरे इन समस्त सम्बन्धों, प्रसंगों, समस्याओं, घटनाओं, हलचलों आदि के मूल में कार्य करने वाली केन्द्रवर्ती चेतना की समझ के स्तर पर वास्तव में असली यथार्थ–दृष्टि इस दूसरे रूप में ही दिखाई पड़ती है।"3 यात्री जी के रचनाओं में न केवल केंद्रवर्ती चेतना की पहचान है बल्कि यथार्थ को प्रस्तुत करने की अपनी देखने–समझने की अपनी एक दृष्टि भी है।

मूल शब्दः कथा दृष्टि, यथार्थ चेतना, सामानांतर कहानी, आम अदमी।

प्रस्तवाना
सेवा राम यात्री जी ने लगभग 18 कथा संग्रह, 33 उपन्यास, दो व्यंग्य संग्रह, एक संस्मरण तथा एक संपादित कथा संग्रह हिंदी जगत के पाठकों को दी है। इनकी पहली कहानी श्नई कहानियाँश पत्रिका में 1963 में 'गर्द गुबार' नाम से प्रकाशित हुई । इन्होंने 1987 ई. से 2003 ई. तक प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका वर्तमान साहित्य का संपादन भी किया। इनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं – दूसरे चेहरे (1971 ई.), केवल पिता (1978 ई.), अकर्मक क्रिया (1981 ई.), धरातल, टापू पर अकेले, अलग–अलग स्वीकार, काल–विदूषक, सिलसिला, खंडित संवाद, नया संबंध, भूख तथा अन्य कहानियाँ, अभयदान, पुल टूटते हुए, विरोधी स्वर, खारिज और बेदखल, परजीवी आदि। इनके प्रमुख उपन्यास हैं – दरवाजों में बंद दस्तावेज, लौटते हुए, कई अंधेरों के पार, अनदेखे पुल, कलंदर, आत्मदाह इत्यादि।
इनकी कहानियों का विकास 'समानांतर कहानी' के दौर में देखा जा सकता है। 'समानांतर कहानियां' मुख्य रूप से आम आदमी के जीवन पर कलम चलाने की बात करती है। 'समानांतर कहानी' के संदर्भ में 'कमलेश्वर' का मत है कि –यह (समानांतर कहानियां) मुजस्सिम आदमी की बदलती हुई, धारणाओं उसके प्रश्नों और चिंताओं की लिखित तहरीर ही नहीं बल्कि समय में लिए गए उसके फैसलों की यथार्थ प्रतिलिपि भी है।"[4] 'समांतर कहानी की रूपरेखा स्थिर करते हुए 'सारिका' पत्रिका के श्समांतर कहानी विशेषांक (अक्टूबर 1974) में कमलेश्वर ने अपने मेरा पन्ना संपादकीय में देश में बढ़ते अत्याचार, भ्रष्टाचार, अवसरवादिता तथा अन्याय आदि पर प्रकाश डालते हुए कहा, इस बीच देश के आम आदमी का जो नुक़सान हुआ है, उससे एक फ़ायदा भी हुआ है। अब वह मोहभंग की स्थिति भी नहीं है। यह एकदम नंगे हो जाने की द्विविधाहीन स्थिति है।"[5] इस कथन से दो तथ्य स्पष्ट होते हैं पहला कि जो कहानियाँ मोहभंग की स्थिति की हैं, उनसे समांतर कहानी अलग है और दूसरा कि जो कहानियाँ द्विविधा की स्थिति पर प्रकाश डालती हैं, उनसें भी यह भिन्न है। समान्तर कहानी विशेषांक में 'आम आदमी' की स्थिति को दर्शया जाता है– इन हालात में आम आदमी का संकट इतना विकट हो गया है कि आज उसके पास अपने फ़ैसले ले सकने की ताक़त भी नहीं रह गई है। आम आदमी बुरी तरह ज़रूरत का मारा हुआ है, यही उसकी यंत्रणामय स्थिति है। [6] मतलब यह निकला कि ज़रूरत का मारा आम आदमी

अब इतना कमजोर हो गया है कि कोई फ़ैसला नहीं ले सकता। इसी आम आदमी को समांतर कहानी के लेखक अपना विषय बनाते हैं। समानांतर कहानियों में 'आम आदमी' का चित्रण किसान, मजदूर, दफ्तर में काम करने वाले, रिक्शा चालक, दर्जी, नाई इत्यादि विविध रुपों में देखने को मिला है। 'आम आदमी' से अभिप्राय समाज के उस वर्ग से है, जिसका समूचा जीवन संघर्षमय होता है, वह सत्ताधारियों द्वारा शोषित होता है और समाज द्वारा दंडित किया जाता हैद्य उसका सम्पूर्ण जीवन कष्टदायक होता है। "1970 के बाद की कहानियों में निम्न–मध्य वर्ग पर अधिक बल दिया गया और उसमें वास्तविक परिस्थिति और सर्जनात्मक विचार की टकराहट है, वास्तविकता की पहचान है। इसी वर्ग के आदमी को या कृषक मजदूर वर्ग के आदमी को ही श्आम आदमीश माना गयाद्य"[7] 'आम आदमी' के जीवन के हर पहलू व समस्याओं का चित्रण यात्री जी की कहानियां करती हैं– जैसे जीवन में अर्थाभाव की समस्या, संबंधों में बिखराव, विवाह और प्रेम संबंधी नवीन मूल्य, महानगरों में मकानों की समस्या इत्यादि ।

विषय विस्तार,

यात्री जी अपनी कहानियों में आम जीवन में घटित होने वाली छोटी–छोटी समस्याओं को चित्रण बहुत ही सजीव और सरल तरीके से करते हैं। इनकी एक प्रसिद्ध कहानी है 'दिशाहारा' इसमें दफ्तरी जीवन और महानगरों में मकानों की समस्या को दिखया गया हैद्य महानगरों में मकानों की समस्या का होना आम बात है, अलग–अलग जगहों से लोग महानगरों में नौकरी की तलाश में आते हैं और रहने के लिए वे लोग प्रायः ही मकानों की तलाश में रहते हैंद्य कहानी का नायक धीरज भी इनमें से एक है। जो अपने मित्र श्याम लाल के आश्रय में रहता है और अपने एक निश्चित ठिकाने के लिए एक घर की तलाश करता है। एक सही मकान की तलाश के लिए वह अपने दफ्तर के चपरासी को कमीशन भी देता है। अंत में एक मकान मिलता भी है परन्तु उसकी अवस्था बहुत जर्जर होती है। अब धीरज इस दुविधा की स्तिथि में है की वो अपने मित्र के पास बोझ बनकर रहे या फिर घर जैसे दिखने वाले खंडहर को ही अपना ठिकाना बना ले। "धीरज का मन उस स्थान पर पहुंचकर इतनी बुरी तरह बुझ गया कि उसकी तीव्र इच्छा हुई कि वह उस घर में घुसने के बजाय तुरंत लौट चले। उसे अपने साथ आये आदमी पर भी मन–ही–मन बहुत गुस्सा आया कि इस भले आदमी को इतनी भी समझ नहीं है कि कैसा मकान दिखलाना चाहिए। लेकिन साथ ही उसे यह बात भी याद आ गई कि सुन्दर लाल के साथ बहुत दिनों तक नहीं रहा जा सकता कभी न कभी अपना अलग ठिकाना तो बनाना ही पड़ेगा।"8 मकान देखकर वापस आने के बाद वह श्यामलाल के घर के 'कम्फर्ट' के बारे में सोचता है और अपने लिए एक अच्छे घर की तलाश को जारी रखने का निर्णय करता है।

यह तो सच है कि हर नौकरी पेशा आदमी को पैसों की तंगी में अपना जीवन बीतना पड़ता हैद्य वह आदमी पैसों को बचाने के लिए तरह तरह के जोड़–तोड़ का इस्तेमाल करता है। 'जीने का गणित' कहानी में एक दफ्तर के बाबू को दिखया गया हैद्य जो हमेशा पैसों की तंगी में रहता है और हमेशा ही पैसों की बचत में लगा रहता है। उसके अनुसार पैसे हमेशा अपने जरुरत के हिसाब से ही खर्च करने चाहिए और पैसों को अपने भविष्य के लिए बचत करके रखने चाहिए । वह हमेशा ही पैसों की बचत में जुटा रहता है। वह हर वस्तु का मोल–भाव करके ही खरीदता है और दोस्तों पर एक चाय से अधिक खर्च को फिजूल खर्ची समझता है। वह दफ्तर जाने के लिए रिक्शे का प्रयोग नहीं करता है परन्तु कभी दुर्भाग्य वश उसे रिक्शा लेना भी पड़ा तो वह पैसे कम कराने की तरकीब खोजता रहता है। रिक्शे वाले से वह पैसा कम करने के लिए जिद्द करता है "रिक्शाचालक का तर्क था, बाबू जी, आपको पांच पैसे क्या फरक पड़ता है, और उसका अर्थशास्त्र कहता था, पैसे की कीमत हमारे और तुम्हारे लिए अलग–अलग थोड़े ही है । कीमत की समानता वाली ऊंची बात रिक्शाचालक की बुद्धि में नहीं घुसी तो उसने हार मान ली, चलो बाबू जी, आपकी ही रही, जो जी में आये दे देना।"[9] अंततः वह दफ्तर पंहुच गया। फिर जब वह शाम को जब वह दफ्तर से घर जाने को रवाना हुआ तो फिर उसने उसी रिक्शे वाले से पैसे कम करने की जिद्द पर अड़ गयाद्य जिसका परिणाम हुआ की रिक्शे वाले ने उसे ले जाने से माना कर दिया और अंत में उसे पैदल ही घंटों चल कर घर आना पड़ा।

'आकाशचारी' कहानी में कल्पना और यथार्थ का सुन्दर मिश्रण देखने को मिलता हैद्य इस कहानी का मुख्य पात्र रामदास जो की एक मध्यवर्गी परिवार से संबंध रखता है। वह एक कल्पना जीवी व्यक्ति है जो अपने कर्म से अधिक अपने भाग्य पर अधिक भरोशा करता है। उसे शराब की बुरी आदत भी होती है। उसे अपने भाग्य पर भरोशा होने के कारण वह लाटरी भी खेलने लगता है और लोटरी खेलने के लिए वह सबसे प्रिय मित्र से भी उधार भी लेता है। वह हर बार सोचता है की उसकी लोटरी लग जाएगी और वह अमीर बन जायेगा। परन्तु अंत तक ऐसा नहीं होता है और वह अपने मित्र का कर्जदार बन जाता है और लाटरी की बुरी आदत के कारण उसकी प्रेमिका 'तारा' भी 'रामदास' को छोड़कर चली जाती हैद्य कहानी के अंत में रामदास का मित्र सोचता रहता है कि "लाटरी के टिकटों से क्या होता है?श कहकर तारा चली गई तो मैं देर तक यही सोचता रहा कि रामदास सपनों का जीवंत सौदागर है या मरीचिका का मरु मृग ?"10

इनकी कहानियाँ सहज तो हैं परन्तु प्रभाव–स्तर पर उनकी किसी के साथ प्रतिद्वन्द्विता नहीं दिखतीं । 'दूसरे चेहरे' से लेकर 'अकर्मक क्रिया', 'आदमी कहाँ है', 'स्पर्श', 'आत्महन्ता की डायरी' आदि कहानियों की यह विशेषता है। इनकी कहानियों में लगभग सभी पात्र एक सामान्य मनुष्य के रूप में चित्रित है। आम जीवन में घटने वाली घटनाएँ इनकी कहानियों का हिस्सा होती है। 'त्रिकोण' कहानी एक 'प्रेम त्रिकोण' पर आधारित कहानी है। इसमें एक मध्यवर्गीय शिक्षक के प्रेम को दिखाया गया है। जो एक अमीर व्यक्ति गोपीनाथ के घर उनकी पत्नी इंदिरा और उनकी बेटी रमा को होम ट्यूशन देने जाता है। वह इंदिरा जी की सरलता और रमा की मासूमियत को देखकर आकर्षित हो जाता है। रमा और इंदिरा भी मन ही मन शिक्षक को पसंद करने लगती है। परन्तु एक मध्यवर्गीय शिक्षक के लिए इतने अमीर घराने की लडकियों में से किसी एक को भी स्वीकार करना बहुत मुश्किल हो जाता है और यह अपने आप को इस प्रेम त्रिकोण की दुविधा से निकाल नहीं पाता है और कहता है " उसी शाम मेरे जीवन में दो परस्पर विरोधी चीजें आयी थी– रमा का प्रेम, जिसकी मैंने कल्पना नहीं की थी, और श्रीमती इंदिरा गोपीनाथ का समर्पण, जिसकी मैंने वांछा नहीं की थी। उनके उत्सर्ग भरे पात्र को लेकर मैं इतना उद्भ्रान्त हो गया हूँ, कि मेरी समझ कुछ भी काम नहीं करती।"11 कहनी के अंत में उसे यह समझ आ जाता है की उच्चे घरानों में छोटे छोटे प्रेम प्रसंग भूला दिए जाते हैं या खत्म कर दिए जाते है। उसकी भलाई

इसी में है की वो भी इन बातों को भूला कर जीवन में आगे बढ़े। अतः देश–काल, परिस्थिति,पात्र का निर्धारण करने में यात्री जी निष्णात हैं। पाठक–वर्ग को इनकी कहानियों में अपने जीवन का प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ता है। अतः एक कुशल कहानीकार के कथानक का यह प्रभाव है, क्योंकि कथानक कहानी का प्राण होता है और उसका सम्बन्ध गम्भीरतर विवेचना से होता है। उनकी कहानियों में सभी घटनाएँ श्रृंखलित होकर मुख्य घटना का पथ प्रशस्त करती हैं।

यात्री जी चरित्र–चित्रण करने में दक्ष हैं। इनकी कहानियों के पात्र विपरीत परिस्थियों में भी मशाल लेकर चलने वाले हैं। इनकी प्रसिद्ध कहनी 'टापू पर अकेले' में महाशय जी भी एक ऐसे पात्र हैं। जो जीवन भर ब्रह्मचर्य का पालन करते रहें और अपने गाँव के लोगों को स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने को प्रेरित करते रहे। जहाँ भी जरुरत पड़े महाशय जी लोगों की भलाई के लिए आगे खड़े मिलते रहे और आजादी की लड़ाई में इन्हें जेल भी हुईद्य उनके वृद्ध होने के बाद जब कथा वाचक उन्हें सहसा अपने घर में देखता है तो कहता है "सहसा मुझे उन अँधेरी रातों की याद आ गई, जब वीरान गलियों में महाशय जी जलती लालटेन हाथ में उठाए निरक्षर किसानों और भूमिहीन मजदूरों को अक्षर ज्ञान देने जाया करते थे। मुझे लगा कि महाशय जी निर्जन टापू पर अकेले हैं, लेकिन उस वीराने को आबाद करने का संकल्प अभी भी उनके साथ है।"12 यही कारण है कि यथार्थ के धरातल पर अडिग रहते हुए, उनके पात्र अपनी समस्याओं का निराकरण करने, बाधा का निर्विघ्न कर देने अथवा आपत्ति पर विजय प्राप्त कर लेने में स्वयं की भूमिका को स्थापित करने में समर्थ हैं।

इन्होंनें जीवन के बदले हुए यथार्थ को वाणी देने का काम किया हैं। इनके पूर्ववर्ती कहानीकारों ने जीवन के जिन यथार्थ स्थितियों की कल्पना कर रहे थे। वे वर्तमान की भयावह जीवन स्थितियों से मेल नहीं खा रहे थे। लेकिन यात्री जी ने अपनी कहानियों में निम्न मध्यवर्गीय जीवन के भयावह यथार्थ का चित्रण करते हैं। इन्होंने मध्यवर्गीय पीड़ा और आत्मकुंठा को 'जोंक' कहानी के माध्यम से दर्शया हैद्य हर निम्न मध्यवर्गीय परिवार महीने के अंत में पैसों की तंगी से गुजरता है और ऐसे में घर पर एक मेहमान का आ जाना जो कुछ दिनों तक रहने के लिए आया हो किसी समस्या से कम नहीं होताद्य अतः दफ्तर के साहब के यंहा भी उनके पुराने मित्र का आगमन होता है। जो की बेरोजगार है और कुछ दिनों के आश्रय की इच्छा से आया हैद्य जब साहब (दादा) की पत्नी अपने मायके गई हुई है और महीने का अंत होने वाला हैद्य घर में राशन भी खली हो चूका हैद्य तब दादा मन ही मन बड़बड़ाते हैं की "मैं उससे बातें करने से बचना चाहता था क्योंकि उसके यों यकायक टपक पड़ने से मेरी सारी व्यवस्था गड़बड़ा गई थी। एक नाकारा बेरोजगार आदमी की जो अब लड़का भी नहीं रह गया हो को झेलते चला जाना निम्न मध्य वर्ग गृहस्थ के बूते के बाहर की बात थीद्य"13 यह बात सच है की नौकरी पेशा व्यक्तियों की हालत महीने के अंत में बहुत खस्ता हो जाती है और उस समय किसी के आने से उन्हें बचत की गई राशि को निकालने के लिए 'पोस्ट ऑफिस' या 'बैंक' का रुख करना पड़ता है।

यात्री जी की कहानियों में यथार्थ की खोज किसी एक दिशा तक सीमित नहीं रही जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के अनछुए प्रसंगों और स्थितियों का पूरी ईमानदारी के साथ चित्रण उन्होंने किया है। इनकी एक कहानी है 'गौरव' इसमें इन्होंनें मानवीय संबंधनों में आए दिखावेपन को दर्शया हैं। कहानी का मुख्य पात्र जो की एक मध्यवर्गीय व्यक्ति है और काम की तलाश में इधर–उधर भटकता हैद्य एक दिन उसकी भेंट सहसा अपने पुराने मित्र से हो जाती है जो की बहुत अमीर व उच्चे खानदान का है। उससे बात करने के दौरान पता चलता है की उसके मित्र का भाई शशिकांत और चाचा ठगी के इल्जाम में गिरफ्तार हो चुके हैंद्य वह अन्दर ही अन्दर प्रसन्न था क्यों कि वह अपने भाई और चाचा के जायदत को ख़रीदना चाहता था जो की नीलाम होने वाली थीद्य "उसने असावधानी में कहना शुरू कर दिया, शशिकांत ने मेरे साथ बिजनैस में पचास लाख भी लगा दिये होते तो मैं उसके केस को एकदम 'हाई लाइट' नहीं करता। हमारे कुनबे का पिछला तो तुम्हें सब पता है ही। अब दादा–लाई जायदाद का बंटवारा हो तो चाचा बिंदी लाल और शशिकांत की प्रापर्टी मुझे ही खरीदनी पड़ेगीद्य उसका मन्तव्य सुनकर मैं भीतर तक सिहर उठा तो क्या वह बाप–दादा की जायदाद बिकवाने के लिए इतना उतावला हो उठा है? शायद चाचा और भाई की गिरफ्तारी को लेकर वह इसी वजह से उत्साहित था कि घर की पुश्तैनी जायदाद का बंटवारा होगा तो वह उन लोगों के हिस्सों को कुछ लाख रुपयों में हड़प लेगा। यों जायदाद बिकती न बिकती मगर इस आपत्ति में तो उसका बिकना अनिवार्य ही हो चला थाद्य"[14] अतः इससे यह पता चलता है की आज के संबंध मात्र पैसों पर टिके हुए हैंद्य इस कहानी के संदर्भ और मानवीय संबंधों के बारे में डॉ 'अशोक भाटिया' ने कहा है– "से. रा. यात्री की श्गौरवश कहानी स्पष्ट करती है कि संपन्न उच्च वर्ग में मानवीय संबंध नाम मात्र को रह गए हैं। छोटे भाई को अपने चाचा और बड़े भाई को गिरफ्तार होने का दुख नहीं है। उसे तो इसे व्यापार संभल जाने की आशा दिखाई देती है।"[15]

स्वतंत्रता के बाद हिंदी के कहानीकारों में यात्री जी का नाम भी बहुत आदर से लिया जाता है। यात्री जी निम्न मध्यवर्गीय आम आदमी के जीवन को चित्रित करते हैं इसलिए उनके रचनओं में भाव पक्ष के साथ कला पक्ष का सहज एवं सुन्दर समनव्य हुआ है। यात्री जी जिन दृश्यों का वर्णन करते हैं इनकी भाषा उसका सजीव चित्र प्रस्तुत कर देती है। यही कारण है कि इनकी रचनओं में सहजता, पात्रों का अनुकूल परिवेश एक अनुठे ढंग से दृष्टिगोचर होता है। इनकी कहानियाँ सम्वेदना को व्यक्त करने में बहुत प्रभावशाली हैं। इनकी भाषा बहुत नवीन और पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करने वाली है। छलावा उपन्यास का पात्र कहता है, "भाषा सोच के मुकाबले कमजोर माध्यम नहीं है आदमी के सोच विचार का कोई भी यानी महीन से महीन पक्ष भी ऐसा नहीं है जिसे भाषा में व्यक्त न किया जा सके, मगर सबसे बड़ी बात यह है कि न तो हम भाषा के विकास के बारे में स्वयं सचेत हैं न उसके नए से नए रूप की ओर आकर्षित होते है। "[16] यात्री जी ने अपनी रचनाओं में भाषा को अधिक महत्व दिया हैद्य इनकी कहानियों की कथावस्तु में प्रभावमयता सहज स्वाभाविक दृष्टिकोण होने के वजह से इनकी कहानियों के कथानक का अपना एक ही वैशिष्ट्य है। परन्तु कहीं–कहीं कथावस्तु सामान्य होने के कारण कहानियाँ बोझिल लगती है। सामान्य शब्दों का प्रयोग बराबर हुआ है जिसके कारण कुछ कहानियाँ आम सी जान पड़ती है और कहीं–कहीं तो इनकी भाषा के कारण वातावरण इतना साकार हो उठा है की अपेक्षित भाव भी अपने आप पाठकों के सम्मुख मुखर हो जाता है। यात्री जी अनेक भाषाओं पर अच्छी समझ होने के कारण इनकी कहानियों में भाषा सौन्दर्य, अलंकार, कहावतें, मुहावरें, वक्रोक्ति, व्यंग्य व स्थानीय बोली आदि का उपयोग कहानी में पाठक की रोचकता को बनाए रखती है एवं यही कारण है कि कहानियों का भाषा सौन्दर्य बना रहता है। परन्तु

शिल्पगत मौलिकता की बात की जाए तो कुछ कहानियाँ कोई विशेष प्रभाव उत्पन्न नहीं कर पाती है। इस बात में कोई दो राय नहीं है की इनकी लेखनी इंसानी संवेदनाओं के धरातल को छूती है। अतः इन सब कारणों की वजह से यात्री जी अन्य साहित्यकारों की तुलना में अपनी एक विशेष जगह बनाने में सफल रहते हैं।

निष्कर्ष

अतः इन की रचनाएं पाठकों को जीवन के यथार्थ से परिचित कराती है, जिन्हें वह समझता तो है पर उसके मन से हमेशा स्वयं साक्षात्कार नहीं कर पाता है। जो भी बिखराव आम आदमी भीतर चल रहा होता है। उस बिखराव को रोकने के लिए इनकी कहानियाँ व्यक्ति को सचेत करती है और व्यक्ति को जमीन से जोड़े रखती है। इनकी कहानियां जमीन से जुड़ी हुई हैं, जो आम आदमी को स्तर से उठाने का कार्य करती है। इनकी कहनियों का आम इन्सान परिस्थितियों से संघर्ष तो करता है परन्तु उसकी जुबान चुप रहती है परन्तु आक्रोश की चिंगारियां उसके भीतर जलती रहती है। इनकी कहानियों में पाठक अपने ही तरह के अपनी ही वेशभूषा और स्वभाव के, चाल–ढाल के, रूप–रंग के लोगों को पाते हैं जो उन्ही की भाँति दुरूख–सुख पाते, आते–जाते और अपनी भावना को व्यक्त करते नज़र आते हैंद्य जिसकी वजह से पाठक वर्ग को इनसें जुड़ने में आसानी होती है। ये अपनी कहानियों द्वारा मनुष्य–मनुष्य के बीच एक समानता को स्थापित करते हैं। इनकी कहानियों का वैशिष्ट्य यह है कि वे पाठक को कहानी के अन्तिम पृष्ठ तक ले जाने की क्षमता रखती हैंद्य यात्री जी कथा साहित्य गहरी अनुभूतियों की सहज अभिव्यक्ति है। जिसको समृद्ध करने का कार्य इनकी भाषा करती है। इनके भाषा के संदर्भ में पुष्प पाल सिंह कहते हैं–ष्से.रा.यात्री में भी भाषा का यह जीवन धर्मी रचाव बहुत सुंदर बन पड़ा है, पात्रों के बोलचाल से हटकर लेखकीय टिप्पणी और वर्णन में भी इनकी भाषा इस संस्कार में पगी हुई है।ष17 इनकी कहानियाँ जीवन धर्मी होने के साथ–साथ वर्तमन के यथार्थ को भी बिना किसी तामझाम के दर्शाती हैं। इनकी कहनियों में दिखया गया आम आदमी ही इनकी कथा का प्राण तत्व है और आम आदमी का जीवन सत्य ही इनकी कहानियों का यथार्थ है। जो इनकी कहानियों को सजीव बनती हैं।

सन्दर्भ सूची

1. रवीन्द्रनाथ के निबंध, भाग–2, साहित्य अकादेमी, पृष्ठरू 10
2. हिंदी उपन्यास रू एक अंतर्यात्रा, राम दरश मिश्र,राजकमल प्रकाशन,1968,पृष्ठरू34
3. हिंदी कहानी रू अन्तरंग पहचान, उपेन्द्रनाथ अश्क, नीलाम प्रकाशन,1967,पृष्ठरू7
4. सारिका, अक्टूबर 1974, समांतर कहानी विशेषांक, पृष्ठः11
5. वही; पृष्ठः25
6. वही; पृष्ठः26
7. स्वतन्त्रोत्तर हिंदी साहित्य का इतिहास, लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, संस्करणः 2009 पृष्ठः59
8. से.रा. यात्री की लोकप्रिय कहानियाँ, 'दिशाहारा', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठरू51
9. सिलसिला, 'जीने का गणित', आलेख प्रकाशन,1979, पृष्ठरू118
10. से.रा. यात्री की लोकप्रिय कहानियाँ,'आकाशचारी', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठः59
11. सिलसिला, 'त्रिकोण', आलेख प्रकाशन,1979, पृष्ठः55
12. 'टापू पर अकेले', मिनाक्षी प्रकाशन,1983, पृष्ठः10
13. से.रा. यात्री की लोकप्रिय कहानियाँ, 'जोंक', प्रभात प्रकाशन, पृष्ठः35
14. 'ख़ारिज और बेदखल', 'गौरव', किताब घर प्रकाशन,1998, पृष्टः74
15. डॉ अशोक भाटिया,'समकालीन हिंदी कहानी का इतिहास',प्रथम संस्करण2003, पृष्ठः114.
16. से.रा.यात्री 'छलावा' उपन्यास, पृष्ठ–97.
17. पुष्पपाल सिंह, ष्समकालीन कहानी का नया परिप्रेक्ष्यष्, प्रथम संस्करण 2011, पृष्ठः339.